16वाँ गाजरघास जागरुकता सप्ताह

16–22 अगस्त, 2021

गाजरघास यानी पार्थेनियम को देश के विभिनन भागों में अलग-अलग नामों जैसे कांग्रेस घास, सफेद टोपी, चटक चांदनी, गंधी बूटी आदि नामों से जाना जाता है। हमारे देश में 1955 में दृष्टिगोचर होने के बाद यह विदेशी खरपतवार लगभग 35 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र में फैल चुकी है। यह मुख्यतः खाली स्थानों, अनुपयोगी भूमियों, औद्योगिक क्षेत्रों, बगीचों, पार्कों, स्कूलों, रहवासी क्षेत्रों, सड़कों तथा रेलवे लाइन के किनारों आदि पर बहुतायत में पायी जाती हैं। पिछले कुछ वर्षों से इसका प्रकोप सभी प्रकार की खाद्यान्न फसलों, सब्जियों एवं उद्यानों में भी बढ़ता जा रहा है। वैसे तो गाजरघास पानी मिलने पर वर्ष भर फल-फूल सकती है परंतु वर्षा ऋतु में इसका अधिक

अंकुरण होने पर यह एक भीषण खरतपतवार का रूप ले लेती है। गाजरघास का पौधा 3-4 महीने में अपना जीवन चक्र पूरा कर लेता है तथा एक वर्ष में इसकी 3-4 पीढ़ियां पूरी हो जाती है।

गाजरघास से मनुष्यों में त्वचा संबंधी रोग (डरमेटाइटिस), एक्जिमा, एलर्जी, बुखार दमा आदि जैसी बीमारियाँ हो जाती हैं। अत्यधिक प्रभाव होने पर मनुष्य की मृत्यु तक हो सकती है। पशुओं के लिए भी यह खरपतवार अत्याधिक विषाक्त होता है। गाजरघास के तेजी से फैलने के कारण अन्य उपयोगी वनस्पतियाँ खत्म होने लगती हैं। जैव-विविधता के लिये गाजरघास एक बहुत बड़ा खतरा बनती जा रही है। इसके कारण फसलों की उत्पादकता बहुत कम हो जाती है।

नियंत्रण के उपाय

1. जगह-जगह संगोष्ठयां कर लोगों को गाजरघास के दुष्प्रभाव एवं नियंत्रण के बारे में जानकारी देकर उन्हें जागरुक करें।
2. वर्षा ऋतु में गाजरघास को फूल आने से पहले जड़ से उखाड़कर कम्पोस्ट एवं वर्मी कम्पोस्ट बनाना चाहिए।
3. वर्षा आधारित क्षेत्रों में शीघ्र बढ़ने वाली फसलें जैसे ढैंचा, ज्वार, बाजरा, मक्का आदि की फसलें लेनी चाहिए।
4. अक्टूबर-नवम्बर में अकृषित क्षेत्रों में प्रतिस्पर्धात्मक पौधे जैसे चकौड़ा (*सेन्ना सिरेसिया* या *सेन्ना तोरा*) के बीज एकत्रित कर उन्हें फरवरी-मार्च में छिड़क देना चाहिये। यह वनस्पतियां गाजरघास की वृद्धि एवं विकास को रोकती हैं।
5. घर के आस-पास एवं संरक्षित क्षेत्रों में गेंदे के पौधे लगाकर गाजरघास के फैलाव व वृद्धि को रोका जा सकता है।
6. गाजरघास के साथ अन्य वनस्पतियों को भी नष्ट करने के लिए ग्लायफोसेट (1.0 से 1.5%) और घास कुल की वनस्पतियों को बचाते हुए केवल गाजरघास को नष्ट करने के लिए 2,4-डी (1.0 से 1.5%) या मेट्रिब्यूजिन (0.3 से 0.5%) नाम के शाकनाशियों का प्रयोग करें।
7. ग्रीष्म एवं शरद ऋतु में गाजरघास अंकुरित होने के पश्चात् अधिक बढ़वार नहीं कर पाती, पर पानी मिलने या वर्षा होने पर यही पौधे शीघ्र बढ़कर बीजों का उत्पादन कर देते हैं। अतः ऐसे समय इन्हें शाकनाशियों द्वारा नष्ट करना चाहिए।
8. फसलों में गाजरघास को रसायनिक विधि द्वारा नियंत्रित करने के लिये खरपतवार वैज्ञानिक की सलाह अवश्य लें।
9. मेक्सिकन बीटल (*जाइग्रोग्रामा बाइकोलोराटा*) नामक कीट को वर्षा ऋतु में गाजरघास पर जैविकीय नियंत्रण के लिए छोड़ना चाहिए।
10. अपने परिसर को गाजरघास से मुक्त करने के लिये सभी संभव प्रयास करने चाहिए।

अपील

मुझे प्रसन्नता है कि आईसीएआर-खरपतवार अनुसंधान निदेशालय (डीडब्ल्यूआर), जबलपुर हर साल **"गाजरघास जागरूकता सप्ताह"** का आयोजन कर जनता को इस अप्रिय खरपतवार का प्रबंधन और उन्मूलन करने के लिए प्रेरित करता है। जैसा कि आप जानते हैं कि जानवरों, मनुष्यों, पौधों और पर्यावरण का स्वास्थ्य आपस में जुड़ा हुआ है, और "वन हेल्थ" एक एकीकृत दृष्टिकोण है जो इस मौलिक संबंधों को पहचानता है। इसलिए, बेहतर पारिस्थितिक मानक बनाए रखने के लिए गाजरघास उन्मूलन इस दिशा में एक कदम है। गाजरघास दुनिया भर में व्याप्त खरपतवारों में से एक उग्र खरपतवार है, जिससे कृषि उत्पादकता, मानव और पशु स्वास्थ्य और जैव विविधता को भारी नुकसान हुआ है। भारत में, यह फसली और गैर-फसली भूमि, शहर के आवासों, रेल और सड़क के किनारे और संस्थानों के परिसरों में गंभीर समस्या बन चुका है। इस खरपतवार के प्रबंधन के लिए कई क्षेत्रों के विशेषज्ञों को समस्या से निपटने के साथ-साथ स्वास्थ्य खतरों के बारे में जनता में जागरुकता पैदा करने की आवश्यकता है। भाकृअनुप-खरपतवार अनुसंधान निदेशालय ने गाजरघास प्रबंधन और इसके उपयोग के लिए बहुत प्रभावी प्रौद्योगिकियां विकसित की हैं। इसके अलावा, यह "स्वच्छ भारत अभियान" की एक प्रमुख गतिविधि के रूप में अधिक महत्वपूर्ण होता जा रहा है और इसलिए सभी संस्थानों, विश्वविद्यालयों और कृषि विज्ञान केंद्रों को जल्द से जल्द "गाजरघास मुक्त" परिसर सुनिश्चित करना चाहिए।

निदेशालय द्वारा इस वर्ष 16-22 अगस्त तक पूरे देश में सोलहवें गाजरघास जागरुकता सप्ताह का आयोजन किया जा रहा है। मैं विश्वविद्यालयों, संस्थानों और कृषि विज्ञान केंद्रों के सभी लोगों से "स्वच्छ भारत अभियान" के एक घटक के रूप में इस गतिविधि में भाग लेने और "गाजरघास-मुक्त" परिसर सुनिश्चित करने की अपील करता हूं।

त्रि. महापात्र
(त्रिलोचन महापात्र)
सचिव, कृषि अनुसंधान और शिक्षा विभाग
एवं महानिदेशक, भा.कृ.अनु.प.

गाजरघास मिटाना है। फसलें, पर्यावरण एवं जैव-विविधता बचाना है। उत्पादन बढ़ाना है।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें: **डॉ. जे.एस. मिश्र** निदेशक
भा.कृ.अनु.प.-खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर - 482004 (म.प्र.)
फोन: (0761) 2353934, फैक्स: 2353129, ई-मेल: dirdwsr@icar.org.in

भाकृअनुप ICAR

हर कदम, हर डगर किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
Agrisearch with a human touch

ISO 9001 : 2015 Certified

DWR

कृपया वेबसाइट देखें: www.dwr.org.in

प्रस्तुतकर्ता: डा. सुशील कुमार